फिल्म समीक्षा : स्वरूप और समीक्षक के गुण

फिल्म समीक्षा साहित्यिक समीक्षा से भिन्न प्रकार की समीक्षा है यद्यपि साहित्य और फिल्म का सम्बन्ध तो है। फिल्म को सर्वश्रेष्ठ कला कहा गया है, क्योंकि उसमें विभिन्न कलाओं का मिश्रण है। उसमें कथा, पट-कथा, अभिनय, छायांकन, सम्पादन, साज सज्जा, गीत, संगीत, ध्वन्यांकन, पार्श्व गायन, नृत्य, निदेशन आदि विभिन्न कलाओं का संगम है। अतः फिल्म समीक्षक को निदेशक के समान सम्पूर्ण कलाओं का मर्मज्ञ होना चाहिए। एक फिल्म को देखकर 'सरस' और 'नीरस' कहना आसान है, यह साधारण दर्शक का आस्वादन है। लेकिन समीक्षक साधारण दर्शक नहीं। फिल्म का सम्पूर्ण अवलोकन उनका कर्तव्य है और उन्हें फिल्म आर्ट की गहरी समझ होनी चाहिए। फिल्म दृश्य प्रधान है, लेकिन 'श्रव्य' की भूमिका भी निर्णायक है। समीक्षक को इन दृश्य-श्रव्य माध्यमों की जानकारी होनी चाहिए।

यह तो पहले कहा गया है कि फिल्म में संवेदना और टेकनिक का मिश्रण है। इसलिए फिल्म समीक्षक को जितना अनुभूति-प्रवण होना चाहिए उतना तकनीक से परिचित होना। कथा, पटकथा, संवाद, गीत, संगीत अभिनय आदि अनुभूतियों के अन्तर्गत आने वाले हैं तो छायांकन, सम्पादन ध्वन्यांकन आदि तकनीक के अन्तर्गत। जो समीक्षक समान रूप से इन दोनों में प्रवीण है, वह सफल समीक्षक होगा। अभिनय कला की समीक्षा करते समय समीक्षक को अभिनय कला के विभिन्न आयामों का अवबोध होना है। अपनी-अपनी भूमिका को हरेक अभिनेता जितनी तन्मयता से निभाता है, उनके चेहरे पर भावों का उतार-चढ़ाव किस प्रकार प्रकट होता है, अभिनय दर्शकों पर जितना प्रभाव डालता है, इन सब का

Scanned by CamScanner

सूक्ष्म निरीक्षण करना है। छायांकन फिल्म की कथा-गति और दृश्य-सौन्दर्य में जितना सहायक है, इसे जानने हरेक शॉट के दृश्यांकन पर ध्यान देना है और अभिनय, नृत्य, संगीत और संघर्ष के दृश्यों को स्वाभाविकता प्रदान करने, छायांकन कहाँ तक सफल है इसका भी मूल्यांकन करना है। सम्पादन में फिल्म को गतिशीलता प्रदान करने, अनावश्यक दृश्यों को निकालने की जो क्षमता है, उस पर विचार करना है। इस प्रकार फिल्म के प्रत्येक अंग की सफलता और असफलता की जाँच करनी है।

फिल्म समीक्षा में निर्देशन का मूल्यांकन महत्वपूर्ण है। फिल्म के एक-एक घटक के संयोजन में, फिल्म के भाव को पूर्णता प्रदान करने में अभिनय के सन्तुलन में, दृश्य संयोजन में, लोकेशन के चुनाव में, गीत-संयोजन में निदेशक की प्रवीणता पर सविशेष ध्यान देना चाहिए। निदेशक की कमजोरियों की आलोचना करनी है। फिल्म तकनीक परिवर्तनशील है, फिल्म तकनीक में विलक्षण परिवर्तन आते रहते हैं। पटकथा लेखकों तथा निदेशकों की नई पीढी नित नए प्रयोग आजमा रही है। समीक्षक को फिल्म की इस नवीनता की तलाश करनी है। जिस तरह नए निदेशक नए विचारों को लेकर नए प्रकार की फिल्में बना रहे हैं उसी तरह समीक्षक की नजरें पड़नी चाहिए। तटस्थता या निष्पक्षता फिल्म समीक्षक के लिए जरूरी है। किसी अभिनेता या निदेशक के प्रति विशेष मोह के कारण उनकी फिल्मों की झूठी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए। अतः फिल्म समीक्षक को इन्हीं कार्यों पर विशेष ध्यान देना है—

फिल्म में सर्व-कलाओं का संगम है। इसलिए इन सभी कलाओं का ज्ञान समीक्षक को होना चाहिए।

कथा, पट-कथा, अभिन्य, संवाद, गीत आदि अनुभूति-प्रवण अंगों की रागात्मकता का निरुपण करना है।

छायांकन, सम्पादन, ध्वन्यांकन आदि तकनीकी घटकों की सफलता की जाँच करनी है।

अभिनय कला एवं चरित्रांकन की पूर्णता-अपूर्णता पर विचार करना है। निदेशक की निपुणता पर सविशेष ध्यान देना है।

मुख्य रूप से दृश्य-माध्यम होने के कारण फिल्म के दृश्यांकन एवं

Scanned by CamScanner

लोकेशन की संगति का मूल्यांकन करना है।

फिल्म में मनोरंजन कहाँ तक है, कलात्मकता कहाँ तक है, इसका निरूपण करना है।

फिल्म में कला के अनेक प्रकार हैं, उनमें से सफल घटकों का विशेष उल्लेख करना है।

किन किन घटकों में असफलता है उनका तर्कसंगत निरूपण करना है। फिल्म समीक्षक को बिलकुल तटस्थ रहना चाहिए, किसी अभिनेता, निदेशक आदि के प्रति विशेष अनुराग के कारण उनकी झूठी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए।

Scanned by CamScanner